स्नातक प्रतिष्ठा (मैथिली)
द्वितीय खंड - २०१८-२०
चतुर्थ पत्र

समालोचना

समालोचकक गुण —

आलोचकक मुख्य कार्य कोनो आलोच्य विषय वा वस्तुकेँ निष्पक्ष भाव सँ नीक जकाँ देखब, पढ़ब ओकर परीक्षण करब, व्याख्या आ मूल्यांकन करब तत्पश्चात ओकर गुण-दोषकेँ उजागर करब होइत अछि। एकर लेल आलोचक के नीर-क्षीर विवेकी होयबाक चाही, अर्थात हंसवृत्ति जकाँ। जेना हंस दूध आ पानिकेँ फराक कए दैत अछि तहिना आलोच्य वस्तुक गुण-दोषकेँ उजागर करब। आलोचक भावुक होइत छथि आ कोनो आलोच्य वस्तुक सहृदयतापूर्वक अध्ययन कए ओकर गुण-दोषक विवेचन कए ओहि प्रसंग अपन मत प्रकट करैत छथि। वस्तुतः आलोचक रचनाकार आ पाठकक मध्य मध्यस्थक काज करैत छथि।

कोनो नीक आलोचक मे निम्नांकित गुण होएब अपेक्षित होइत अछि —

(१) प्रतिभा —

कोनो आलोच्य वस्तुक परीक्षण लेल प्रतिभा अतिअनिवार्य गुण मानल गेल अछि। एकर अभावमे आलोचना हास्यप्रद भए सकैत अछि।

(२) सहृदयता —

सहृदयता सहानुभूतिक पर्यायवाची थिक। मुदा सहानुभूति रचनाकार सँ नहि रचना सँ होएबाक चाही। आलोचकमे हृदय राग-द्वेष सँ मुक्त होएबाक चाही कारण जौँ राग-द्वेष रहत तँ आलोचना काककृतिक भए जाएत अर्थात आलोचकक दृष्टिमात्र दोष पर केन्द्रित रहत।

(३) उदारता —

आलोचक उदारभावनाक होएबाक चाही। किएक तँ उदारभावनाक अभावमे आलोचक मे स्वार्थपरता आबि जाइत अछि। उदारभावनाक अभावमे आलोचना कोकिलावृत्तिक भए जाएत। आलोचक आप नहिं ढंगक रीति नीति के [illegible] स्वीकार लागैत छथि। ओ अपन मनोवृत्तिक अनुसार रचनाक स्वार्थपूर्ण समीक्षा करैत छथि।

(४) गुणग्राहकता —

सृष्टिक कोनो रचना अपवाद नहिं अछि जे कोनो मे मात्र गुणेटा विद्यमान होमए। कारण गुण-दोष सभ वस्तुमे थोड़-बेसी रहैत अछि। आलोचक आलोच्य वस्तुक गुण-दोष दुनूकेँ उजागर करथि। आलोचककेँ मात्र दोष खोजब नहिं बल्कि गुण ग्राहक सेहो होएबाक चाही। जाहिसँ पाठक वर्गकेँ आनन्द भेटए।

(५) निष्पक्षता — एकरा आलोचकक सर्व प्रधान गुण मानल जाइत अछि। एकरो हंसवृत्ति कहल जाइत अछि। एहि गुण सँ मण्डित आलोचक एक निष्पक्ष न्यायाधीशक जकाँ आचरण करैत छथि। एहिमे आलोचक आलोच्य वस्तुमे व्याप्त गुणकेँ ग्रहण करैत छथि आ अवगुणक प्रसंग सावधान भऽ ओकरा त्यागि दैत छथि।

(६) सौन्दर्य-भावना —

एकरा सेहो प्रतिभाक अन्तर्गत मानल जाइत अछि। एहि सौन्दर्य-भावनाक अन्तर्गत पाँचगोट तत्व अबैत अछि — स्पष्टता, शुद्धता, प्रतीतियुक्तता, ~~अनुकूलता~~, प्रभविष्णुता आ समीक्षाशैलीक अनुकूलता। एक सफल आलोचकमे एहि पाँचो गुणक समावेश होएब आवश्यक होइत अछि।

अर्थात जे आलोचक उपर्युक्त गुण सँ युक्त रहैत छथि ओ सफल आलोचक कहबाक अधिकारी बनैत छथि। सफल आलोचकमे विस्तृत ज्ञान होएब आवश्यक होइत अछि एकर अभाव मे ओ आलोचना नहिं कऽ सकैत छथि। ~~अपन~~